

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 19 August 2026

अवसरों का सागर : अंडमान सागर में मिला प्राकृतिक गैस का बड़ा भंडार, आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मील का पत्थर

Publisher

Published on 27 Sep 2025



भारत के ऊर्जा क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव आने वाला है। अंडमान सागर में प्राकृतिक गैस का विशाल भंडार मिलने की आधिकारिक घोषणा हो चुकी है। केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने इसे देश के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि यह खोज भारत को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाला “मील का पत्थर” साबित होगी।

अंडमान सागर : अवसरों का सागर

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह न केवल सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं बल्कि अब यह क्षेत्र ऊर्जा संसाधनों के मामले में भी बड़ी भूमिका निभाने जा रहा है। वैज्ञानिक और ऊर्जा विशेषज्ञ लंबे समय से मानते रहे हैं कि इस समुद्री इलाके में हाइड्रोकार्बन और प्राकृतिक गैस के भंडार मौजूद हो सकते हैं। हाल ही में हुए सर्वे और ड्रिलिंग की शुरुआती रिपोर्ट ने इस संभावना को हकीकत में बदल दिया।

हरदीप पुरी का बयान

केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा:

“भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा अभी भी आयात पर निर्भर है। लेकिन अंडमान सागर में प्राकृतिक गैस की खोज से देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में नई ऊर्जा मिली है। यह केवल संसाधन की खोज नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षा कवच भी है।”

पुरी ने यह भी कहा कि इस गैस का उपयोग बिजली उत्पादन, घरेलू ईंधन और औद्योगिक विकास के लिए किया जाएगा। साथ ही, यह कदम भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा और रोजगार के नए अवसर खोलेगा।

ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर

भारत दुनिया के सबसे बड़े ऊर्जा उपभोक्ताओं में से एक है। वर्तमान में देश अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का लगभग **85 प्रतिशत हिस्सा आयातित तेल और गैस से पूरा करता है**। इस कारण विदेशी मुद्रा पर भारी दबाव पड़ता है और वैश्विक बाजार में कीमतों में उतार-चढ़ाव का सीधा असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर होता है।

अंडमान सागर में प्राकृतिक गैस का भंडार मिलने से भारत को अपनी जरूरतों को घरेलू स्तर पर पूरा करने का मौका मिलेगा। इससे आयात पर निर्भरता कम होगी और ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का रास्ता साफ होगा।

स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव

इस खोज से अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का महत्व और बढ़ जाएगा। यहां इंफ्रास्ट्रक्चर का तेजी से विकास होगा। विशेषज्ञ मानते हैं कि:

- नए औद्योगिक प्रोजेक्ट्स शुरू होंगे।
- स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।
- ऊर्जा आधारित नए स्टार्टअप्स और निवेश को बढ़ावा मिलेगा।
- पर्यटन के साथ-साथ औद्योगिक हब बनने की संभावना बढ़ेगी।

राष्ट्रीय स्तर पर, यह खोज भारत को वैश्विक ऊर्जा बाजार में एक मजबूत खिलाड़ी के रूप में स्थापित करेगी।

पर्यावरणीय संतुलन की चुनौती

हालांकि प्राकृतिक गैस को “क्लीन फ्यूल” माना जाता है, लेकिन समुद्री क्षेत्रों में ड्रिलिंग और गैस उत्पादन से पर्यावरणीय खतरे भी पैदा हो सकते हैं। विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि परियोजना को आगे बढ़ाते समय समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा।

सरकार का दावा है कि पर्यावरण के अनुकूल तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। साथ ही, प्रदूषण नियंत्रण और जैवविविधता की रक्षा को प्राथमिकता दी जाएगी।

वैश्विक दृष्टिकोण

दुनिया के कई बड़े देश पहले ही प्राकृतिक गैस पर जोर दे रहे हैं। अमेरिका, रूस, कतर और ऑस्ट्रेलिया इस क्षेत्र में अग्रणी हैं। भारत की यह खोज न केवल घरेलू खपत को पूरा करेगी बल्कि भविष्य में भारत को प्राकृतिक गैस निर्यातक देशों की श्रेणी में भी ला सकती है।

आत्मनिर्भर भारत के सपने की ओर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के “आत्मनिर्भर भारत” अभियान में यह खोज एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखी जा रही है। यह सिर्फ ऊर्जा की आपूर्ति तक सीमित नहीं रहेगी बल्कि इससे भारत की आर्थिक मजबूती, रणनीतिक स्वतंत्रता और वैश्विक प्रतिष्ठा को भी नया आयाम मिलेगा।

अंडमान सागर में प्राकृतिक गैस का यह “खजाना” भारत के लिए अवसरों का सागर साबित हो सकता है। हरदीप पुरी का बयान इस खोज की गंभीरता और महत्व को रेखांकित करता है। आने वाले समय में यह खोज भारत को न केवल ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाएगी बल्कि आर्थिक विकास और रणनीतिक मजबूती की दिशा में भी नई राह खोलेगी।

यह खोज साबित करती है कि अगर इच्छाशक्ति और संसाधनों का सही इस्तेमाल किया जाए तो भारत किसी भी क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू सकता है।